फुलवारी

छत्तीसगढ़ी बालगीत

अनीता चंद्राकार

आलोक प्रकाशन

फुलवारी

(छत्तीसगढ़ी बाल गीत संग्रह)

अनिता चन्द्राकर

C - अनिता चन्द्राकर - 2022

आलोक प्रकाशन

अनुक्रमणिका

ममा दाई.....6

दाई बबा के सुरता.....7

माटी के मया.....8

छत्तीसगढ़ी स्वर अउ व्यंजन.....9

किसान.....11

जिनगी के गाड़ी.....12

रुख राई.....13

नशा.....14

सुग्घर छत्तीसगढ़.....15

करोनी.....16

भाजी वाला.....17

आमा बगइचा.....18

पानी.....19

रिश्ता.....20

शिक्षा.....21

सावन.....22

हरेली तिहार.....23

राखी तिहार.....24

तीजा पोरा.....25

देवारी 26
होली.....27
फुग्गा वाला.....28
तितली रानी.....29
चंदा मामा.....30
मोर गाँव.....31
बेटी.....32
बिलई टुरी.....33
महतारी.....34
बाम्हन चिरई.....35
चिटरा.....36
मेला.....37
गुरुजी.....38
गरमी.....39
बरसात.....40
जाड़.....41

मोर गोठ

सब्बो मयारू लइका,

अपन बोली अउ अपन भाखा मा कोनो बात ला कहवई अउ सुनई दुनों बने लागथे।खेल खेल मा कतको गाना अउ कविता तुहूँ मन बना लेथव।सुन सुन के कतको गाना तको याद हो जथे।अपन माटी के महक अउ मया के बाते अलगेच होथे।मँय हा हमर तिहार बार ,मौसम, प्रकृति, खेल पढ़ई लिखई परंपरा अउ संस्कृति ला तुँहर मन बर कविता के माला मा गूँथे के उदिम करे हँव।सरल शब्द मा रचे मोर कविता ला जरूर पढ़व।जब मँय तुँहर मन जइसे लइका रेहेंव ता अपन बोली भाखा मा लिखाय, कोनो किताब नइ मिलय ता अपन दाई बबा के तीर मा ओधके ओकरे मन से कहिनि, गाना अउ कविता सुनव।

सुनत सुनत जी नइ भरय, मन करय कि अउ सुनतेव। सुनत सुनत अइसे रम जाँव कि ओकर मन के कोरा मा ही सुत जाँव। तुहूँ मन ला सुग्घर सुग्घर कविता सुनाय बर मोर पुस्तक "फुलवारी" ला लिखे हँव, जेकर से तुमन तको अपन बचपन के मजा ले सकव अउ हाँसत खेलत गावत अपन जिनगी ला जीवव।ये पुस्तक तुमन ला जरूर पसंद आही, मोला अइसन विश्वास अउ उम्मीद हावय।

अनिता चंद्राकर

ममा दाई

****

अब्बड़ मया करईया हमर ममा दाई।
ननपन के सँगवारी हमर ममा दाई।
गरमी के छुट्टी मा बड़ मजा करथन।
चौरा मा बइठ के, कहिनि रोज सुनथन।
सुग्घर कहिनि सुनईया हमर ममा दाई।
अब्बड़ मया करइया हमर ममा दाई।।
बोइर के मुठिया अउ अमली के लाटा।
बड़ मिठाथे मसूर संग खोइला भाटा।
इडहर के कढ़ी अउ आमा के अथान।
बरी अउ बफौरी ला कभू नइ भूलान।
रोटी पीठा के बनईया हमर ममा दाई।
अब्बड़ मया करईया हमर ममा दाई।।
पीपर पान के तुतरु अउ डमडम बाजा।
संग मा खेलथन चोर पुलिस अउ राजा।
कभू कभू परथे सब ला महतारी के थपरा।
हमर दाई हा खवाथे चीला अउ दूधफरा।
मया दुलार के कोठी हमर ममा दाई।
अब्बड़ मया करईया हमर ममा दाई।

दाई बबा के सुरता

****

अब्बड़ सुरता आथे मोला, मोर दाई अउ बबा के।
कभू नइ भूला सकव, मया मोर दाई अउ बबा के।
आमा के अथान , अउ बुकनी अमारी जिर्रा के।
बासी संग पताल के चटनी, अउ अम्मट अटर्रा के।
हटरी के मीठ मीठ बतासा, लाडू अउ चना मुर्रा के।
खार ले लाय बोइर बहेरा, मूँग राहेर अउ तिंवरा के।
ओकर बनाय ठेठरी खुरमी, अउ सोंहारी बरा के।
तसमई गुलगुल भजिया ,चीला अउ दूधफरा के।
बबा के सुनाय सुग्घर कहिनि, कोठी मा बेंदरा के।
ओकर सिखाय जम्मों बात, अउ मया भरे कोरा के।

माटी के मया

****

छानी मा पिंयर पिंयर फूल कोंहड़ा के, मुसुर मुसुर हाँसत हे।
अउ लउकी के बहिनी तरोई घलो, संग मा मुस्कावत हे।
बारी मा हरियर हरियर साग भाजी, सुग्घर गाना गावत हे।
कुंदरू करेला अउ सेमी, मुड़ी ला जोर के गोठियावत हे।
जोंधरा के सँगवारी खीरा हा, भीतरी डाहर लुकावत हे।
दुलौरिन बेटी रमकेलिया हा, देख तो कइसे इतरावत हे।
हमर मयारू चिरपोटी पताल हा, लजा के ललियावत हे।
होथे अपन माटी के बड़ मया, जम्मों झन हा बतावत हे।
झन जाहू दुरिहा अपन भुइयाँ ले, हमन ला सिखावत हे।

छत्तीसगढ़ी स्वर अउ व्यंजन

****

अ - अ से अथान अम्मट नुनचुर।
आ - आ से आमा हरियर पिंयर।
इ - इ से इड़हर अब्बड़ सुहाथे।
ई- ई से ईटा मा महल बनाथे।
उ - उ से उरिद दार के बरा बनाबो।
ऊ - ऊ से ऊँटवा ला पत्ता खवाबो।
ए - ए से एक्कागाड़ी मा घुमय ल जाबो।
ऐ - ऐ से ऐंठी पहिन के सबला देखाबो।
ओ - ओ से ओंगन तेल करिया करिया।
औ - औ से औघड़ बबा से रहिबो दुरिहा।
क - क से करसी के पानी पीबो।
ख - ख से खटिया ला सफ्फा रखबो।
ग - ग से गरवा के सेवा करबो।
घ - घ से घर ला गोबर मा लिपबो।
च - च से चँउक सुग्घर पूरथे दाई।
छ - छ से छत्ता म मदुरस भराही।
ज - ज से जँवारा पिंयर पिंयर।
झ - झ से झँउहा मा गोबर भर।
ट - ट से टठिया म बासी खाबो।
ठ - ठ से ठगुवा ले बच के रहिबो।
ड - ड से डबरा के पानी देखव।
ढ - ढ से ढँकना मा साग ला ढाँपव।
त - त से तरिया मा भरगे पानी।
थ- थ से थरहा के रंग धानी।
द - द से दरमी खावव संगवारी।
ध - ध से धनिया मा महकत बारी।
न - न से नरवा हमर चिन्हारी।
प - प से परेवा हमर संगवारी।
फ - फ से फरा आज बनाबो।
ब - ब से बर तीर खेले ला जाबो।

भ - भ से भलुआ जंगल मा रहिथे।
म - म से मछरी पानी मा तउरथे।
य - य से यदुवंशी मन नाचथे गाथे।
र - र से रमकेलिया अब्बड़ लजाथे।
ल -ल से लइका मन पढ़े बर जाही।
व - व से वकालत के गियान पाही।
स - स से सरई जंगल के मान बढ़ाथे।
ह - ह से हरदी हा अब्बड़ ममहाथे।

किसान

****

बड़े फजर ले उठ के जाथे, खाँध मा धर के नाँगर।
पहिन ओढ़ के कमरा खुमरी, अपन खपाथे जाँगर।
लहू पसीना दिन रात बोहाथे, काम हरय पूजा ओकर।
का जाड़ अउ का गर्मी, सब्बो दिन हा एके बरोबर।
बादर बरसय कड़के बिजली, करथे काम किसान।
जे कमाथे दुनिया बर, मिलय नइ संगी ओला मान।
मुड़ भर करजा बोड़ी लदागे, चिंता मा बदन सूखागे।
का करय किसान बिचारा, रोवत रोवत दिन पहागे।

जिनगी के गाड़ी

****

मुसवा कस बिला मा लुकाय ले, काम नइ बनय संगवारी।
बघुआ कस जिये ला परही, तभे कमाबे नाँव संगवारी।
टेटका कस टाँग के मुड़ी ला, झन झाँक परदा भाड़ी।
घेरी बेरी रंग बदलय ले, नइ चलय जिनगी के गाड़ी।
चिटरा कस दउड़े ल पड़ही, काम तभे बनही संगवारी।
तभे कमाबे नाँव सँगवारी।
कउँआ कस काँव काँव नरिया के, झन काकरो जी ला खिसियाबे।
मीठ मीठ बोली सुहाथे सब झन ला, कोइली कस मया बगराबे।
गिधवा कस उड़य ल पड़ही, जिनगी तभे चलही संगवारी।
तभे कमाबे नाँव सँगवारी।

रुख राई

****

रुख राई झन काटहू, इही धरती के सिंगार।
फर पाना अउ फूल हा, सेहत बर उपहार।
देथे साफ हवा जिये बर, खाय बर अनाज।
रुख लगावव चारो कोती, हरय पुण्य के काज।
समझव मनखे तुमन, बंजर धरती के पीरा।
झन काटव जंगल ला, रुख राई हरय हीरा।
कइसे सहबे घाम ला, जब तन हा थक जाही।
रुख के छँइहा के सुरता, ओतके बेर तोला आही।
दिनों दिन सिरावत हावय, ए भुइयाँ के पानी।
रुख राई ला बचावव, संकट मा हाबे जिनगानी।

नशा

****

जे मनखे करथे नशा, होथे जी ओखर नाश।
सुध नइ राहय मान के, जइसे जिंदा लाश।।
नशा नाश के जड़ हरय, रहव नशा ले दुरिहा।
सुख शांति भाग जथे, बन के आथे गिरहा।
जिनगी के ये बैरी आय, धियान लगा के सुन।
तन मन हो जथे रोगी, ये बात ला तँय गुन।
काम नइ करय मति, होथे परिवार मा झगड़ा।
बड़ अमोल मानुष तन, पालव झन ये लफड़ा।
खावव सब्जी फल अनाज, अउ पियो रोज दूध।
स्वस्थ राहव सुखी राहव, राखव अपन सुध।

सुग्घर छत्तीसगढ़

****

चंदा सुरुज कस चमके, अइसन छत्तीसगढ़ बनाबो।
नाँव होवय जग मा, सुग्घर छत्तीसगढ़ बनाबो।
हरियर हरियर रुख राई, नरवा नदियाँ के झन सूखय पानी।
मनखे मन रिथे गरुवा बरोबर, मीठ मीठ लागय हमर बानी।
पढ़ लिख के मान बढ़ाबो , मया के अंजोर बगराबो।
नइ करन लाई लिगरी, मेहनत के गीत गाबो।
जुरमिल के सुग्घर छत्तीसगढ़ बनाबो.....
किसम किसम के धान बोबो, किसम किसम के उनहारी ।
दाई दादा हा देवता धामी, हमर संस्कृति हमर चिन्हारी।
छत्तीसगढ़ के पहिचान आय, नरवा गरुवा घुरवा बारी।
झन नटेरे कोनो हम ला, अउ झन देवय कोनो गारी।
कोठी हमर भरय रहाय, चलव अइसन रद्दा बनाबो।
भरय रहाय कोठा कुरिया, सुग्घर छत्तीसगढ़ बनाबो।

करोनी

****

गोरसी मा छेना ला टोर टोर के दुहना मा,
दाई हा गोरस ला चुरोवत रहाय।
दूध के डबकई मा घर बाहिर ममहा जाय।
बिलई के जी ओला देख के ललचावत रहाय।
का का जतन नइ करय मोर दाई हा,
तोप ढाँक के गोरस ला बचावत रहाय।
पींयर पींयर साड़ही के सुरता अभी तक नइ भुला हन।
हमर बाँटा मा करोनी तको रहाय।
करोवन दुहना के पेंदी ला सुतई मा।
सब्बो लइका मन करोनी खावय।
नइ भुलावन हमर दाई के मया ला,
अब दुहना अउ करोनी नंदावत हावय।

भाजी वाला

****

आथे बड़े बिहिनिया,
भाजी वाला लेके ठेला।
जोर जोर से चिल्लाथे,
लेलो भाजी पाला केला।
भाजी ले लव बाबू भइया,
भाजी खाके खून बढ़ाव।
स्वस्थ रहव सब फल खाके,
झटकुन झटकुन आव।
खीरा कोहड़ा अउ करेला,
ला हँव लाली पताल।
येला खाके सेहत बनाव,
होही सबके सुग्घर गाल।
दाई बहिनी देखव तो,
ला हँव बड़ कन तरकारी।
किसम किसम के भाजी,
आहू देखे बर मोर बारी।

आमा बगइचा

****

किसम किसम के आमा के रुख, हावय हमर बगइचा मा।
पींयर पींयर दिखत हे आमा, आवव गोलू भोलू श्यामा।
सरसर सरसर हवा बोहात हे, गिरही पक्का पक्का आमा।
झोला धरके आहू सँगवारी, आज खाहू छकत ले आमा।
चाँटी आमा हे सबले मीठ, जे पाही वो किस्मत वाला।
खुरहेरी आमा के सुवाद ला जानव, हावय वहू निराला।
लटलट ले फरे हे अंडा आमा, दिखय मा हावय सुग्घर।
चटनी एकर गजब मिठाथे, लोड़हा आमा के अथान।
हड़ही आमा मा गुदा नइ हे, सुवाद हावय जी अम्मट।
भोथरा जाथे बत्तीस हा, खवाथे तको जी लटपट।
खोइला करके राखहू आमा ला, पाछू काम आही।
कढ़ी, बफौरी, मसूर ,भाटा, ये साग अब्बड़ मिठाही।
जइसे हावय गुन रंग रूप, तइसे तइसे नाम धरे हन।
सोभा होथे रुख हा धरती के, काटन नइ येला हमन।

पानी

****

बूँद बूँद कीमती पानी के,
समझव एकर मोल।
जल संकट गहरात हे,
अब तो आँखी खोल।
पानी हे ता जिनगी हे,
पानी बिन सब सुन्ना।
पानी पानी कहत रहिबे,
बन जाही ए पहुना।
सफ्फा राखव तरिया नदिया,
झन डारव कोनो कचरा।
चारों मुड़ा सूक्खा पड़गे,
मंडरावत हावय खतरा।
बूँद बूँद बचावव संगी,
गलती झन कर घेरी बेरी।
जुरमिल करबो चलव उदिम,
बिना करय अब देरी।

रिश्ता

****

सरग बरोबर महतारी के कोरा,
सिंहासन होथे बाबू के खाँध।
दाई बबा के सुग्घर कहिनि,
ओकर सीख ला गाँठ बाँध।
कका काकी के मया दुलार
जइसे रुख के छँइहा।
माथा टेक के आशीष लेवव
बड़ पावन हमर भुइँया।
भाई बहिनी सुख दुख के साथी,
फूल बरोबर जिनगी महकाथे।
हीरा मोती कस संगवारी मन,
कभू हँसाथे कभू रोवाथे।
अनमोल होथे सब्बो रिश्ता नाता,
राखव एकर मान जी।
मया दुलार अउ आशीष मिलही।
करव सबके सम्मान जी।

शिक्षा

****

शिक्षा के सूरज उगय, बने रहय संस्कार।
मिलथे दुनिया मा तभे, आदर अउ सत्कार।
रद्दा इही दिखाथे सब ला, सब ले बड़े औजार।
पढ़ लिख के गुणी बनव, होही बेड़ा पार।
ज्ञान के दीया बार के, दूर करव अँधियार।
जुरमिल के काम करव, हो जाही उजियार।
आथे जिनगी मा संकट, शिक्षा बनाथे आधार।
शिक्षित बनके सब झन, समझव जिनगी के सार।
गुरुजी ला आदर देवव, होथे वो ज्ञान-भंडार।
बढ़त जाव आगू कोती, झन मानौ कभू हार।

सावन

****

झिमिर झिमिर बरसत हे पानी, आगे सावन के महीना।
मगन होगे भुइँया हा भिज के, भरगे दुवारी अउ अँगना।
खेत कोती जावत हे नँगरिहा , हावय वोला खेती के चिंता।
झन पिछवावय किसानी, झन होवय ओकर कोठी हा रीता।
मातगे गली चिखला के मारे, तरिया नरवा मा भरगे पानी।
बारी मा फुदकत हे चिटरा, कुम्हड़ा नार मा तोपागे छानी।
झिमिर झिमिर बरसत हे पानी, आगे सावन के महीना।
कहाँ ले आगे पिटपीटी अउ बिच्छी , टर्र टर्र करत हे मेचका।
हरियागे भुइँया सावन मा, मुड़ी ला टाँग के देखत हे टेटका।
गेड़ी चड़बो हमन हरेली मा, आगे संगी सावन के महीना।
गरजत हे बादर घुमरत घुमरत, आगे संगी सावन के महीना।
झिमिर झिमिर बरसत हे पानी, आगे सावन के महीना।

हरेली तिहार

****

हरियर हरियर दिखत हे धरती, करे हे नवा सिंगार।
उल्हा उल्हा रुख के पाना, आगे जी हरेली तिहार।
कोनो पाटत हे मुरमी ओइरछा मा, कोनो लीपत हे दुवारी।
चाउँर पिसान अउ चन्नी ला, अब चउँक पूरय के बारी।
नाँगर गैती रापा कुदारी, हँसिया बसला के पूजा करबो।
अंडा पत्ता अउ पुतका लोंदी, गरुवा बइला ला खवाबो।
लीम डारा ला खोंचे बर घर मा, राउत बबा हा आथे।
सुपा भर भर दार चाउँर पा के, बदला मा खुस हो जाथे।
बड़ गुन सवनाही काँदा कुसा के, बइगा हा दवा बनाथे।
लोहार कका हा ठोक के पाती, रोग राही ला भगाथे।
जोड़ा नरियर फोड़ के, जम्मों देवी देवता ला मनाबो।
चुरत हे गुरहा चीला अउ भजिया, भोग लगा के खाबो।
गेड़ी सँवारथ हे हमर बबा हा, मच मच के गेड़ी चढ़बो।
खो-खो , बिल्लस, टप्पा नरियर, भाठा मा जाके खेलबो।
नइ काटन जी रुख राई ला, धरती ला हरियर बनाबो।
पशुधन के रक्षा करबो, चलव हरेली तिहार मनाबो।

राखी तिहार

****

होगे बिहिनिया उठ जा भाई, नहा धो के हो जा तइयार।
सावन पुन्नी के सुग्घर दिन, आगे राखी के पावन तिहार।
चँउक पूर के पीढ़ा रखे हँव, थारी तको मँय सजा डरेव।
दाई बनावत हे बरा तसमई, तोर अगोरा मा मँय खड़ेव।
राखी के बंधना झन टूटय भाई, सुखी रहय हमर परिवार।
सुख दुख मा संग रहिबो, देबो जिनगी भर मया दुलार।
नइ चाही मोला कोनो भेंट, बस राखी के लाज बचाबे।
हरस तैं मोर दुलरवा भाई, कभू बहिनी ला झन भुलाबे।

तीजा पोरा

****

आगे आगे तीजा पोरा के तिहार, जम्मों बेटी बहिनी ला मया दुलार।
जाँता पोरा अउ चूल्हा चुकिया, नँदिया बइला मा सजे हे बजार।
बनत हावय घर घर ठेठरी खुरमी, भाई मन बहिनी घर जाही।
रद्दा देखत रहिथे बहिनी मन, तीजा मनाय बर मइके आही।
नँदिया बइला ला सजा धजा के, पोरा के दिन पूजा करथे।
झन होवय कोनो कमी, हाथ जोड़के सब विनती करथे।
जब जम्मों बेटी मन मइके आथे, महतारी मन गदगद हो जाथे।
रख के निर्जला उपास बेटी मन, तीजा के पबरित परब मनाथे।

देवारी

****

जुरमिल करथे दिन रात सफई, कोन्टा कोन्टा ला लिपई पोतई।
बड़े बिहिनिया भीड़ जथे काम मा, डटे रिथे मंझनिया के घाम मा।
चमकत रिथे सबके अँगना दुवारी, मनाबो संगी चलव देवारी।
सुआ नाचे बर काकी मन आथे, सुग्घर सुग्घर गाना गाथे।
राउत बबा मन घर घर जाथे, दोहा सबके मन ला भाथे।
पाँचो दिन ले तिहार मनाबो, जुरमिल के रोटी पीठा बनाबो।
संझा बेरा दीया जलाबो, लक्ष्मी माता के पूजा करबो।
नवा नवा कपड़ा पहिनबो, जम्मों सियान के बात सुनबो।

होली

****

फागुन के महीना सुग्घर, आगे मया के तिहार होली।

सुक्खा डारा ला सकेलथे, लइका जवान के टोली।

करथे दहन होलिका के, रतिहा बेरा सब सकलाके।
होली के पावन परब मनावव, मन के भेद भुलाके।
झन करव झगड़ा भूल के, झन खावव नशा के गोली।
फागुन के महीना सुग्घर, आगे मया के तिहार होली।
झाँझ मँजीरा अउ नंगाडा संग, गाथे फाग के गाना।
रंग गुलाल उड़ाथे लइका मन, नइ चले कोनो बहाना।
खावव अइरसा अउ खाजा, बोलव मीठ मीठ बोली।
फागुन के महीना सुग्घर, आगे रंग के तिहार होली।

फुग्गा वाला

****

फुग्गा वाले भइया आय हे ।
रंग बिरंग के फुग्गा लाय हे।
लाल गुलाबी नीला पीला।
सबले सुग्घर नीला वाला।
गली गली मा बेचत हावय।
लइका मन दौड़त आवय।
अपन पसंद के फुग्गा लेथे।
फुग्गा पाके खुशी मनाथे।
खेलत कूदत नाचत जाथे।
देख के फुग्गा वाला मुस्काथे।

तितली रानी

****

रंग बिरंग के सुग्घर पंख, सबके मन ला भाथे।
पाछू पाछू भागे लइका मन, वो दुरिहा उड़ जाथे।
फूल हरय ओकर संगवारी, चुप्पे चुप गोठियाथे।
मीठ मीठ रस पी के दिन भर, ओहा खुशी मनाथे।
कहाँ ले आथे कहाँ जाथे, नइ जानन ये बात।
करत होही आराम तितली, जइसे होथे रात।
तितली रानी तितली रानी, कहाँ हावय तोर घर।
एती ओती घुमत रिथस, हाथ नइ आवस काबर।

चंदा मामा

****

चंदा मामा अंगना मा आ जा, खेलबो दुनों झन संग।
मुचुर मुचुर तँय हाँसत रिथस, दिखथे तोर सुग्घर रंग।
काबर रिथस अतका दुरिहा, बन जा मोर संगवारी।
मिलके खाबो दूध रोटी, चलाबो छुक छुक गाड़ी।
बस्ता धरके स्कूल जाबो, पढ़बो लिखबो नाम कमाबो।
सीखबो अउ सिखाबो सब ला, गुरुजी के आशीष पाबो।

मोर गाँव

****

बड़ सुग्घर हे मोर गाँव।
हावय अमरैया के छाँव।
घर के बाहिर बनय हे चौरा।
खेले लइका मन बाटी भौंरा।
बबा सुनाथे सुग्घर कहिनि।
बइठ के सुनथे भाई बहिनी।
हरियर हरियर खेत खार।
छानी मा कुम्हड़ा रखिया नार।
कुकरा बासथे पहाती बेरा।
चिरई चिरगुन मन डारे डेरा।
लिपा जथे बिहिनिया ले मुहाटी ।
चंदन कस महके गाँव के माटी।
सरर सरर चलथे पुरवैया।
जाथे खेत बासी खा के भैया।
तरिया नरवा ला साफ रखथन।
गरुवा भैंसा के सेवा करथन।
गोबर कचरा के खातु बनाथन।
रुख राई जुरमिल के लगाथन।
लइका मन धियान लगाके पढ़थे।
पढ़ लिख के जिनगी ला गढ़थे।
शिक्षा हा भगाथे कुलुप अँधियार।
चारो कोती एक दिन होही उजियार।

बेटी

****

बेटी बिना ये जग सुन्ना, बेटी जिनगी के आधार।
बेटी अंजोर भुइयाँ के, बेटी बिना जग अँधियार।
झन मारव कोख मा ओला, देवव जीये के अधिकार।
झन कोसे वो अपन भाग ला, मुस्काही पा के दुलार।
फुलवारी बन जाही जिनगी, बेटी ला देवव मान।
बिना डरय वो बाहिर निकले, अगास मा भरय उड़ान।
दुर्गा काली कस ताकत हे, वोला छेरी पठरु झन जान।
मिलही जब बरोबर अवसर, तभे बनाही अपन पहिचान।
दू कुल ला जोड़थे बेटी मन, फूलथे फरथे परिवार।
झन कहव ओला दूसर के धन, ओकर बिन सुन्ना घर दुवार।

बिलई टुरी

**********.

झन कहव मोला बिलई टुरी, सुन सुन के मोर माथा पिरागे।
नाँव सुने बर मेंहा तरस गेंव, ये दुनिया रंग रूप मा मोहागे।
मोरो हावय सुग्घर नाँव, फेर सँगी साथी सबो भुलागे।
मन मा मइल जमय हावय, सबके तन मा लीपा पोती होगे।
नइ पोछे काकरो आँसू, सकला के चारी चुगली करथे।
देखके दूसर के सुख ला, मनखे मन आगी कस बरथे।
झन करव गरब ये तन के , एक दिन माटी मा मिल जाही।
मया के मीठ मीठ बोली बोलव, अंतस ला सुख पहुँचाही।

महतारी

****

धरती के भगवान बरोबर, मया के कोठी महतारी।
जेकर कोरा मा सरग के सुख, दया के मूरत महतारी।
का बिहिनिया अउ का संझा, काम करथे दिन भर।
राँध के पहिली सब ला खवाथे, तभे खाथे वो हर।
लाँघन भूखन रहिके वोहा, सब ला देथे ताते तात।
ओला नइ मिलय कभू छुट्टी, रहय गर्मी या बरसात।
झाँझ मा बन जाथे छइहाँ, कोरा ओकर चारो धाम।
ओकर अँचरा के असीस मा, लइका कमाथे नाम।
घर महकथे फुलवारी कस, करथे सुख के त्याग।
जेकर हावय महतारी , जाग जाथे ओकर भाग।

बाम्हन चिरई

****

तीरे तीर अँगना परछी मा, फुदकत रहिथे बाम्हन चिरई।
बड़े बिहिनिया सब ला जगाथे, चींव चींव करथे बाम्हन चिरई।
खोलखा मा बनाथे खोंधरा, दरपन ला ठोनकथे बाम्हन चिरई।
छप छप करथे पानी मा, बड़ मिहनत करथे बाम्हन चिरई।
फल फूल अन्न ला खाथे, घर के सोभा होथे बाम्हन चिरई।
सुन्ना लागथे घर ओकर बिना, दिखय नइ अब बाम्हन चिरई।

चिटरा

तुरतुर तुरतुर आथे चिटरा।
तुरतुर तुरतुर जाथे चिटरा।
फल ला खाथे कुतर कुतर के,
रुख मा झटकुन चढ़थे चिटरा।
आँखि ओकर बड़का बड़का।
होथे तन मा सुग्घर धारी।
कभू मेड़ मा कभू पेड़ मा,
घूमत रहिथे बखरी बारी।
कभू दिखथे कभू लुकाथे।
चिटिर चिटिर नरियाथे चिटरा।
दउड़त रहिथे एती ओती,
दिन भर मेहनत करथे चिटरा।

मेला

****

चारों कोती मनखे मनखे, अब्बड़ सजे हवय जी मेला।
ढेलवा रहचुली नंदागे संगी, चाट गुपचुप के लगे हे ठेला।
नदिया मा कर के असनान, साधु संत मन करत हे धियान।
बेचावत हे मंदिर के सीढ़िया मा, नरियर धतूरा अउ बेल पान।
भारी भीड़ हे मंदिर मा, दरसन करे बर भोले भगवान के।
सुमरत हे सब महादेव ला, भरत हावय जी पेटी दान के।
आनी बानी के जिनिस दिखत हे, सजे खेलउना के बजार।
मिठई लेवत हे कतको मनखे, कतको लेवत हे खुसियार।
फुग्गा उड़ावत अकास मा, बाजत हे बाँसरी, डमडम बाजा।
नोनी रोवत हे देख झुनझुना, राजू समझत हे खुद ला राजा।
कोनो ला भजिया बरा सुहाथे, पेठा जलेबी हा जी ललचाथे।
चुरी फुंदरी टिकली मुंदरी, मनिहारी कोती महतारी मन जाथे।
होगे बेरा अब घर लहुटे के, मुड़ मुड़ के देखत हे लइका मन।
थकय नइ दिन भर घूम के वोमन, सब ले सुग्घर होथे बचपन।

गुरुजी

****

देके ज्ञान लइका मन ला, रद्दा नवा दिखाथे गुरुजी।
पुस्तक कापी अउ कलम ला, हाथ मा देथे गुरुजी।
कक्षा मा बइठा के रोज, जीए के ढंग सिखाथे गुरुजी।
दुनिया मा का का होवत हे, एला तको बताथे गुरुजी।
भर देथे मन मा आस, होवन नइ देवय निराश गुरुजी।
दीया जइसन बरत रहिथे, बगराथे जग मा अंजोर गुरुजी।
पढ़ लेथे लइका के मन ला, सुख दुख मा रहिथे संग गुरुजी।
देथे आशीष आघू बढ़े बर, मुड़ी मा रखथे हाथ गुरुजी।
दाई ददा हा जनम देथे, जिनगी के कला सिखाथे गुरुजी।
भगवान हरय वोहा धरती के, सच के महता बताथे गुरुजी।
सादा जिनगी जीथे जिनगी भर, ज्ञान के भंडार गुरुजी।
भविष्य बनाथे लइका मन के, देथे मया दुलार गुरुजी।

गरमी

****

आगी बरसावत हे सुरुज बबा हा, चारों मुड़ा घाम।
तात तात हवा चलत हे, कइसे करबो अब काम।
झाँझ धर के गरमी आगे, जाड़ हा भाग गे तैहा।
रुख राई के पत्ता अइलागे, खोजत हे सब छइहाँ।
बूड़े हे लइका मन तरिया मा, लेथे गरमी के मजा।
पछीना के धार बोहात हे, होगे सियान बर सजा।
गली गली मा कुल्फी वाला, बेचत हे बरफ के गोला।
कोनो पीयत हे ठंडा सरबत, कोनो हा कोकाकोला।
करसी मा भरे हे ठंडा पानी, पी के पियास बुझाववं।
गरमी बाढ़त हे अब्बड़ सँगी ,जुरमिल के पेड़ लगाववं।

बरसात

****

बोरा मा भर के लाहे पानी, करिया करिया बादर राजा।
चमकावत हे बिजली अउ, बजावत हे गड़गड़ बाजा।
खलबल खलबल गात हे नरवा, भरगे सब्बो ताल तलैया।
जगा जगा पिटपिटी दिखत हे, टर्रावत हावय मेचका भैया।
झड़ी लगा दिस बादर हा, गाँव गली मा चिखला होगे।
काम चलत हे खेतीबाड़ी के, नाँगर मा बइला फँदागे।
कोहड़ा रखिया तुमा के नार, फूले बर माते हे छानी मा।
डोंगा बना के निकलिस लइका मन, चलावत हे पानी मा।

जाड़

****

जाड़ हावय अलकरहा भइया, बत्तीसी कट कट करत हे।
हाड़ा काँपत हे जाड़ के मारे, कथरी ओढ़ के सब सुतत हे।
टोर टोर के छेना अउ भूसी ला, दाई गोरसी सिरजावत हे।
बबा बइठे हे कमरा ओढ़ के, लइका मन भुर्री बारत हे।
करत हावय सब अगोरा घाम के, सुरुज देव हा लजावत हे।
कइसे होही काम अतेक जाड़ मा, हवा घलो गुर्रावत हे।
दिखत हे धान के डोली पींयर पींयर, खेत खार ममहावत हे।
देख के हरियर भाजी पाला ला, मन मोर गदगद होवत हे।

अनिता चन्द्राकर

व्याख्याता (गणित) , शा. उ. मा. वि. पहंडोर (पाटन) , दुर्ग छत्तीसगढ़
9826105376